आदिवासियों की भीली बोली का स्वरूप : एक अध्ययन

रजनी प्रकाश सोलंकी

सारांश :आदिवासियों की भीली बोलियों का गुजराती से काफी सादृश्य हैं। सच तो यह है कि भीली का विकास राजस्थानी और गुजराती का सहजक्षेत्र है, इसीलिये उसे यह या वह कहने की प्रेरणा होती है। यथार्थ में भीली–बोलियों का क्षेत्र बड़ा व्यापक है, और जिनकी अपनी–अपनी क्षेत्रीय लक्षणीयताएँ हैं। भीली तथा खानदेशी दोनों में ही आर्येतर भाषाओं के चिंह मिलते हैं किंतु यह इतने अल्प है कि इनका निश्चित अभिज्ञान दुष्कर है। इनकी आधार या तो मुण्डा या द्राविड़ी भाषाएँ रही होगी, मुण्डा की संभावना ही अधिक हैं। बाद में ये आर्यभाषा के सांचे में ढली होगी।

कुंजी शब्द : भीली, भीलों, आर्येतर, बोली एवं भाषा।

प्रस्तवाना :

भीलों की भाषा भारतीय भाषाओं के कोलारी (कोलार्य) समुदाय की है, किंतु इनमें से बहुत आज बोलीगत आर्यभाषा बोलते हैं। भीलों की भाषा अब लुप्त हो गई है, पर यह मृत भाषा कैसी थी उसका अनुमान कोरकु, संथाली, मुंडारी आदि भील जाति से सम्बंधित कोल जाति के लोगों से कुछ–कुछ हो सकता है। यद्यपि आज यह भाषा आर्य बनी हुई हैं, तथापि इसमें कुछ आर्येतर तत्त्व दिखाई देते हैं। भीली तथा खानदेशी दोनों में ही आर्येतर भाषाओं के चिंह मिलते हैं, किंतु यह इतने अल्प है कि इनका निश्चित अभिज्ञान दुष्कर है। इनकी आधार या तो मुण्डा या द्राविड़ी भाषाएँ रही होगी, मुण्डा की संभावना ही अधिक है। बाद में ये आर्यभाषा के सांचे में ढली होगी। और आज तो ये पूर्ण रूप से आर्यभाषाएँ हैं। भीलों की निजी भाषा लुप्त हो गई है, इसलिये उसकी पुष्टि करना संभव नहीं है कि यह कोलारियन (कोलार्य) थी या द्राविड़ी। भील, जो कि संभवतः मुण्डा समुदाय के हैं, अपनी प्राचीन भाषा को इतनी प्रभावकता के साथ खो चूके हैं कि अब उनकी भाषा में कुल मिलाकर 6 प्रतिशत शब्दों का प्राचीन अवशेष रह गया है। ये ऐसे शब्द हैं जिनकी आर्य शब्दों से कोई संगति नहीं है। बरार में कुछ भील हैं, जो एक भिन्न भाषा बोलते हैं, इसे भी भीली कहा जाता है, वस्तुतः यह द्राविडी कोलमी की एक विभाषा है। भील बोलियों में कुछ ऐसे शब्द हैं जो अनार्य हैं। संभव है वे किसी मूल भीली के अवशेष हों। भीली गौंडी समुदाय में वर्गीकृत सेन्ट्रल इण्डिया (मध्यभारत) में प्रयुक्त एक द्राविड़ी भाषा है। भीली का वर्तमान रूप उसे आमूल आर्यभाषा घोषित किये हुए है। यह सही है कि भीली में कुछ मुंडा (कोल) और द्राविड़ी[1] तथा कुछ अनिश्चित व्युत्पत्ति के शब्द हैं,[2] तथापि इन्हें आधार मानकर उसके मूलरूप की कोई स्पष्ट धारणा अथवा व्याख्या संभव नहीं है। वास्तव में भील–रक्त, अनुवंश और इतिहास के कभी उजले–धुले पटल पर आज कितने ही ऐसे प्रश्न–चिंह उभर आये हैं कि यकायक कोई समाधान देना '' मेन के दसन, कुलिस के मोदक '' हो गया है।[3] यद्यपि जॉर्ज ग्रियर्सन और राबर्ट शेफर जैसे विद्वानों ने भीलों को आर्येतर मूल का अंगीकार किया है, तथापि जॉर्ज ग्रियर्सन ने पर्याप्त तथ्यों के अभाव में उन्हें मुण्डा या द्रविड़ माने जाने की धारणा को अपुष्ट और संदिग्ध माना है।[4] दूसरी ओर राबर्ट शेफर ने महाभारत की सामग्री के सुचिन्तित विश्लेषण के आधार पर उन्हें आर्येतर उत्पत्ति का सिद्ध किया है। इस तरह भीलों के प्रागार्य भाषा–रूप को लेकर जो भी तथ्य उपलब्ध हुए हैं, उनमें टकराहट है, और इसलिये भीली के प्रचलित स्वरूप के सम्बंध में कुछ भ्रांतियां फैल गई हैं।[5] वास्तविकता में भीली के प्रागार्य रूप के सम्बंध में जो कुछ कहा गया है। वह या तो उसकी आर्येतर शब्द–उत्पत्ति पर आधारित है या फिर प्रजाति–सम्बंधी तथ्यों पर; किंतु जब तक भीली के लुप्त रूप से सम्बंधित ध्वनि–रूपगत विश्वस्त न्यास आकलित नहीं हो जाता, हम इस सम्बंध में कोई पुष्ट और निर्भ्रान्त धारणा नहीं बना सकते।

व्यावहारिक कठिनाईयों के होते हुए भी आदिम जातियों के जीवन के सम्बंध में खोजबीन हुई हैं। और विद्वानों ने भीली के उद्‌भव तथा विकास के सम्बंध में अपने विचार व्यक्त किये हैं । इन विचारकों के दो वर्ग है :

1. वे जिनके अनुसार भील एक आर्येतर प्रजाति है और जिनकी आर्यपूर्व भाषा किसी आर्येतर स्त्रोत (मुंडा या द्रविड संभवतः मुंडा ही अधिक) से मूलबद्ध है। इस मत के प्रवर्तकों ने प्रजाति और नृतत्त्व सम्बंधी तथ्यों के साथ भाषाई तथ्यों को मिलाकर सोचने की भूल की है और इसलिये भीली के वर्तमान स्वरूप को लेकर भी भ्रान्तिमूलकर अनुमान लगाये गये हैं। यथार्थ में भीली का प्रागार्य रूप, जिसे लेकर ये अटकलें लगाई गई हैं, अब लुप्त हो गया है। यही कारण है कि भीली के जीवित रूप को लेकर भी भारी घपला हो गया है। और कई परस्पर विरोधी तथा भ्रान्तिमूलक तथ्य भाषा–शास्त्र के प्रामाणिक ग्रंथों में प्रविष्ट हो गये हैं।[6]

2. इस वर्ग के विद्वानों ने भीली के यथास्थित याने वर्तमान रूप का विवरणात्मक अध्ययन किया है और इसे आर्यभाषान्तर्गत ही स्वीकार किया है। इनमें से कुछ ने इसे राजस्थानी अथवा गुजराती की बोली ओर कुछेक ने इसे स्वतंत्र रूप से उद्भूत और विकसित भाषा या भाषा–गुच्छ प्रतिपादित किया है।

इन दोनों प्रवर्तनों में इसलिये कोई अंतर्विरोध नहीं है, क्योंकि इनमें से पहले मत का सम्बंध भीली के प्रागार्य भाषा–रूप से है और दूसरे का आर्य (उत्तरवर्ती भीली–भाषा–रूप) से पहले मत को पुष्ट करने वाले कथन इस प्रकार हैं :

1. उनकी (भीलों की) भाषा भारतीय भाषाओं के कोलारी (कोलार्य) समुदाय की है, किंतु इनमें से बहुत आज बोलीगत आर्यभाषा बोलते है।[7]
2. भीलों की भाषा अब लुप्त हो गई है, पर यह मृत भाषा कैसी थी उसका अनुमान कोरकु, संथाली, मुंडारी आदि भील जाति से सम्बंधित कोल जाति के लोगों से कुछ–कुछ हो सकता है।[8]
3. यद्यपि आज यह भाषा आर्य बनी हुई हैं, तथापि इसमें कुछ आर्येतर तत्त्व दिखाई देते हैं।[9]
4. भीली तथा खानदेशी दोनों में ही आर्येतर भाषाओं के चिंह मिलते हैं किंतु यह इतने अल्प है कि इनका निश्चित अभिज्ञान दुष्कर है। इनकी आधार या तो मुण्डा या द्राविड़ी भाषाएँ रही होंगी, मुण्डा की संभावना ही अधिक है। बाद में ये आर्यभाषा के सांचे में ढली होंगी। और आज तो ये पूर्ण रूप से आर्यभाषाएँ हैं।[10]
5. भीलों की निजी भाषा लुप्त हो गई है, इसलिये उसकी पुष्टि करना संभव नहीं है कि यह कोलारियन (कोलार्य) थी या द्राविड़ी।[11]
6. भील, जो कि संभवतः मुण्डा समुदाय के हैं, अपनी प्राचीन भाषा को इतनी प्रभावकता के साथ खो चूके हैं कि अब उनकी भाषा में कुल मिलाकर 6 प्रतिशत शब्दों का प्राचीन अवशेष रह गया है। ये ऐसे शब्द हैं जिनकी आर्य शब्दों से कोई संगति नहीं है।[12]
7. बरार में कुछ भील हैं, जो एक भिन्न भाषा बोलते हैं, इसे भी भीली कहा जाता है, वस्तुतः यह द्राविडी कोलमी की एक विभाषा है।[13]
8. भील बोलियों में कुछ ऐसे शब्द हैं, जो अनार्य हैं। संभव है वे किसी मूल भीली के अवशेष हों।[14]
9. भीली गौंडी समुदाय में वर्गीकृत सेन्ट्रल इण्डिया (मध्यभारत) में प्रयुक्त एक द्राविड़ी भाषा है।[15]इससे यह सिद्ध हुआ है कि भील मुण्डा या द्राविड़ (?) के हैं, जिनके प्रागार्य काल में कोई मौलिक भाषा थी जो कालान्तर में सामाजिक और सांस्कृतिक घात–प्रतिघातों के फलस्वरूप नष्ट हो गई है, और आज इसलिये जिसका सर्वथा अभाव हो गया है। वर्तमान भीली में जो भी आर्येतर तत्व दिखाई देते हैं, वे भीली के उसी रूप के धुंधले प्रतिनिधी हैं।

आर्याई भीली : दूसरे वर्ग के प्रवर्तकों ने भीली के वर्तमान रूप की ही विवेचना की है। इनके अनुसार आधुनिक भीली का मूलोउद्‌गम प्राचीन भारतीय आर्यभाषा है। उनके इस निष्कर्ष के मार्ग में मुण्डा अथवा द्राविड़ी नस्ल के शब्द कोई व्यवधान नहीं हैं। ऐसे अनेक शब्द संस्कृत भाषा में भी देखे जा सकते हैं।[16] इस मत के सबसे

प्रबल प्रवर्तक पादरी थामसन हैं, जिन्होंने अपने व्याकरण– ग्रंथ के प्राक्कथन में भीली –शब्द–सम्पत्ति का आंकिकीय विश्लेषण प्रस्तुत किया है। तदनुसार भीली के 84 प्रतिशत शब्द संस्कृत और 10 प्रतिशत फारसी–अरबी से व्युत्पन्न है, जबकि 6 प्रतिशत अनिर्णीत व्युत्पत्ति के हैं।[17] थामसन के शब्द–संचय में कुल मिलाकर 2,956 भीली शब्द है, जिनमें से 2483 संस्कृत, 295 फारसी–अरबी और लगभग 178 शब्द अनिर्णीत व्युत्पत्ति के हैं। पादरी थामसन की उक्त विवेचना से भीली के आर्येभाषोद्भूत होने की धारणा को बल मिलता है। इसी तरह श्री पी.जी.शाह के मतानुसार भीली आधुनिक गुजराती के समान है, और प्रयोग तथा उत्पत्ति में स्पष्ट रूप से आर्याई है।[18]

जार्ज ग्रियर्सन ने भीली के प्रागार्य रूप को विचारणीय बताते हुए भी उसके तथा खानदेशी के उपलब्ध रूप को पूर्णतया आर्यभाषान्तर्गत माना है।[19] ऐसे ही श्री तारापुरवाला ने बरार के पश्चिमी जिले में प्रयुक्त कोलामी बोली के आर्याई भीली(आर्यान भीली) से अपदस्थ होने के तथ्य का उल्लेख किया है।[20] उनके द्वारा प्रयुक्त आर्याई भीली अभिधान सारपूर्ण है। इस प्रकार दो तथ्य सर्वथा निर्भ्रान्त रूप से हमारे सामने आ गये हैं कि भीली का प्रागार्य रूप, यदि कोई या जैसा कि संभव है, मुंडा भाषान्तर्गत था और उसका वर्तमान ढांचा शुद्धतः आर्यभाषाई है। उत्तरवर्ती तथ्य के प्रवर्तक विद्वर्ग की भी इस सम्बंध में दो अवधारणाएँ हैं :

1. – भीली राजस्थानी की एक विभाषा है।
2. – भीली गुजराती की एक विभाषा है, तथा उस पर गुजराती का आभ्यन्तरिक प्रभाव है।

इस मत के प्रतिपादकों ने भीली के प्रतिपादकों ने भीली के भौगोलिक वितरण पर वस्तु मुख होकर ध्यान नहीं दिया। यही कारण हुआ कि भीली बोलियों को कभी राजस्थानी और कभी गुजराती के अंतर्गत रखा गया। वास्तव में भीली की कुछ ऐसी ध्वनि–रूपगत लक्षणीयताएँ हैं, जो उसे राजस्थानी और गुजराती से पृथक एक स्वतंत्र परिप्रेक्ष्य प्रदान करती हैं। डॉ.सुनीतिकुमार जैसे–मूर्द्धन्य भाषा–शास्त्री ने भीली के राजस्थानी या गुजराती विभाषा होने, न होने को लेकर परस्पर विरोधी कथन किये हैं। एक स्थल पर उन्होंने कहा है कि भीली को राजस्थानी का ही एक रूप– भेद समझ, यदि करीब 22 लाख भीली बोलने वालों को राजस्थानी–भाषियों के अंदर लाया जाय, तो वह संख्या 1 करोड़ 60 लाख से अधिक होगी।[21] और इसी तारतम्य में उन्होंने आगे कहा है कि भीली बोलियों का गुजराती से काफी सादृश्य है।[22] सच तो यह है कि भीली का विकास राजस्थानी और गुजराती का सहजक्षेत्र है, इसीलिये उसे यह या वह कहने की प्रेरणा होती है। इसी प्रकार राजस्थान के श्री नरोत्तम स्वामी तथा श्री मथुराप्रसाद अग्रवाल ने भीली को राजस्थानी की 7 प्रमुख बोलियों में से एक मानकर उसकी 4 उपबोलियॉ– 1. गिरासिया, 2. भीलोड़ी, 3. वागड़ी तथा 4. भीली का उल्लेख किया है।[23] यथार्थ में भीली– बोलियों का क्षेत्र बड़ा व्यापक है, और उसके 28 रूप–भेद हैं जिनकी अपनी–अपनी क्षेत्रीय लक्षणीयताएँ हैं। राजस्थानी के क्षेत्र में प्रयुक्त गिरासिया और बागड़ी जैसे भीली–रूपभेद राजस्थानी की प्रतिच्छाया लिये हुए हैं। इन बोलियों पर राजस्थानी प्रभाव की व्याख्या भीलों के राजपूतों से एक लम्बे समय तक हुए–सांस्कृतिक, सामाजिक, और राजनीतिक आदान–प्रदान में अन्तर्हित है। भिलोड़ी भीलेतरों द्वारा कल्पित अभिधान है। भील अपनी भाषा को भीलोड़ी नहीं कहते हैं। यह भीली का ही एक उपभेद है। ग्रियर्सन ने इसका भीली के विकल्प में भी उपयोग किया है। इस तरह का एक रूपभेद मध्यभारत–क्षेत्र की भीली को लेकर भी हुआ है। इसी प्रकार श्री पृथ्वीसिंह मेहता ने बिना कोई प्रमाण दिये लिखा है कि भीली कोई स्वतंत्र भाषा नहीं है, उसका मुख्य अंश राजस्थानी में गिना जाना चाहिये।[24]

निष्कर्ष :

इन सारे तथ्यों की रोशनी में एक बात तो निश्चित है कि भीलों की वर्तमान भाषा आर्यों से आगृहित भाषा है, और वह भीली का उत्तरवर्ती रूप है। भीली का पूर्ववर्ती रूप, जो अब लुप्त हो गया है, इसके वर्तमान रूप से सर्वथा भिन्न था, जिसके अवशेष आर्येतर शब्द–सम्पत्ति के रूप में अद्यतन उपलब्ध हैं, किंतु जिनके द्वारा प्रागार्य भीली का केवल एक धुंधला–सा अनुमान ही संभव है। बात यह है कि भीलों के सांस्कृतिक बिखराव के कारण ही भीली के इतने रूप–भेद दिखाई देते हैं, अन्यथा भीलों का अपना भाषाई रूप था, जिसका वे राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक हीनताओं और उपेक्षाओं के कारण विकास नहीं कर पाये। ग्रियर्सन ने पर्याप्त भाषाई न्यास के होते हुए भी भाषा–सर्वेक्षण खण्डों में भी भीली को राजस्थानी की विभाषा नहीं कहा है।

संदर्भ :

1. जार्ज ए. ग्रियर्सन : लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया, खण्ड 9, भाग 3 : पृष्ठ 9
2. रेव्ह.चेस.एस. थामसन : रूडिमेंटस ऑफ दि भीली लैंग्वेज; प्रिफसे, पृष्ठ 3 । थामसन ने 6 प्रतिशत शब्दों को अनिश्चित व्युत्पत्ति का माना है ।
3. मोम के दांत, वज्र के लड्डू ।
4. जार्ज ए. ग्रियर्सन : लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया, खण्ड 9. भाग 3 : पृष्ठ 9
5. मेरिओ ए.पाई एण्ड फ्रेंक गेनर : डिक्शनरी ऑफ लिग्विस्टिक्स, पृष्ठ 2
6. टी. बरो : द संस्कृत लैंग्वेज, पृष्ठ 378 – 379
7. रेव्ह. चेस.एस.थामसन : रूडिमेंट्स ऑफ द भीली लैंग्वेज, प्रिफेस, पृष्ठ 3
8. डी.एम.मजूमदार :रेसेस एण्ड कल्चर्स ऑफ इण्डिया, अ.3, पृष्ठ 41
9. जार्ज ए. ग्रियर्सन : भारत का भाषा–सर्वेक्षण, खण्ड 1, भाग 1, पृष्ठ 329
10. आई. जे. तारापुरवाला : एलिमेंट्स ऑफ द साइंस ऑफ लैग्वेंज, पृष्ठ. 226 भीली : राजस्थानी की विभाषा।
11. राजस्थानी भाषा : सुनीतिकुमार चटर्जी, पृष्ठ 5
12. वही : पृष्ठ 9
13. शोध – पत्रिका, भाग 10, अंक 3–4, मार्च – जून 1959 : पृष्ठ 81
14. हमारा राजस्थान : पृथ्वींसिंह मेहता, पृष्ठ 9, 10
15. भारतीय इतिहास का उन्मीलन : जयचंद्र विद्यालंकार, पृष्ठ 250
16. अक्षर अने शब्द : के. का. शास्त्री, पृष्ठ 3, 4
17. प्राचीन राजस्थानी गीत, भाग 3, : कविराज मोहनसिंह, पृष्ठ 3
18. अक्षर अने शब्द : के. का. शास्त्री, पृष्ठ 83
19. एलिमेंट्स ऑफ द साइंस ऑफ लैंग्वेज : आई.जे.एस. तारापुरवाला, पृष्ठ 199
20. द लैग्वेज ऑफ महागुजरात : डॉ. टी.एन. दवे, पृष्ठ 27
21. भाषा विज्ञान : डॉ. भोलानाथ तिवारी, पृष्ठ 143
22. हिन्दी भाषा का विज्ञान : डॉ. धीरेन्द्र वर्मा, पृष्ठ 55
23. लिंग्विस्टिक लिमिट्स ऑफ महागुजरात : हरिसिंघभाई व्ही, दिवेटिया, पृष्ठ 6
24 जार्ज ए. ग्रियर्सन : भारत का भाषा–सर्वेक्षण, खण्ड 1, पृष्ठ 329